Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 3 | SPECIAL ISSUE MARCH-2023

मारवाड़ के इतिहास का अनछुआ पहलू 'राईका समाज' : इतिहास एवं संस्कृति के विषेश सन्दर्भ में

सुखराम | शोधार्थी, इतिहास विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर।

ABSTRACT:

KEYWORDS:

इतिहास व संस्कृति की दृष्टि से मारवाड़ एक धनी क्षेत्र रहा है। भौगोलिक दृष्टि से मारवाड़ एक शुष्क व रेतिला प्रदेश है। इस क्षेत्र में रहने वाले लोग कठोर जीवन को जीते है। यहां के लोग विभिन्न जातीय समुदायों में विभाजित है। मारवाड़ में निवास करने वाली विभिन्न जातियों में राजपूत, जाट, राईका (रबारी), पटेल, कुमार, दर्जी, सुथार, मेघवाल इत्यादि प्रमुख है। प्रत्येक जाति का अपना एक विशेष इतिहास व संस्कृति है। इनमें से कई जातियों के इतिहास व संस्कृति पर विस्तृत शोध कार्य हो चुका है या हो रहा है। किन्तु कई ऐसी जातियां भी है जिनका इतिहास एवं संस्कृति तो बहुत प्राचीन व गौरवपूर्ण है साथ ही यह इतिहास मौखिक है तथा संस्कृति विलुप्त होने के कगार पर है। कुछेक इतिहासकारों ने इन जातियों पर कोई कार्य किया भी है तो वह नगण्य मात्र है। इतिहास की सबसे विश्वासपात्र, कर्तव्यपरायण, और स्वाभीमानी जाति राईका समाज को कहा जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

ऐसा ही एक जातीय समाज मारवाड़ का राईका समाज है। इस समाज का इतिहास व संस्कृति दोनों ही बहुत गर्व करने वाला है। इस राईका समाज के सन्दर्भ में कुछ पंक्तियां इस प्रकार है।

सिर पर बहुरंगी पाग, राईका वीरों की शान,

हाथ में लाठी, खुद का स्वाभीमान।

ऊंटों का झुण्ड, हिन्द से अफगान,

स्वामी की भक्ति के लिए प्राणों का बलिदान।।

राईका जाति का इतिहासः–

सम्पूर्ण भारत में फैले राईका समाज का इतिहास बहुत ही प्राचीन व गौरवान्वित रहा है। दंत कथाओं के अनुसार प्रथम राईका को कैलाश में भगवान महादेव ने अपने पिण्ड या मेल से पैदा किया थ उसी पिण्ड का नाम पिण्डा (कहीं कहीं चामड़) रखा गया। पार्वती द्वारा निर्मित ऊंटनी को चराने का कार्य करता था। कालान्तर में उस पिण्डा (चामड़) का विवाह महादेव ने एक राई नामक अप्सरा से करवा दिया। राई व पिण्डा से उत्पन्न संताने ही राईका कहलाई।

कालान्तर में इन राईकों की संख्या में वृद्वि होने के कारण दक्षिण–पश्चिम की ओर (जैसलमेर–मारवाड़) पलायन कर गए। ये राईका जाति के लोग यहां भी ऊंट पालन के पैतृक एवं परम्परागत कार्य करते है। जैसलमेर में इन राईकों के साथ दो दुर्भाग्यपूर्ण घटनाए हुई जिनके कारण जैसलमेर का पूरा राईका समाज के स्वाभिमान की रक्षा हेतु परलायन कर मारवाड़ व कच्छ की ओर जाकर बस गया। मारवाड़ से अनेक राईका वर्तमान में भारत के विभिन्न जगहों पर जाकर बस गए।

मारवाड़ में भी ये राईका समाज के लोग अपने स्वाभिमान के साथ जीने लगे। पहले पड़िहारवंशीय शासकों के शासन के प्रमुख अंग सूतरखाने में कार्य किया। पड़िहार शासक मण्डोर से शासन करते है। यहीं रहते हुए राईका समाज ने राईका बेरा, आसानाडा जैसे जलाशयों का निर्माण करवाया। पड़िहार शासन में ही 'राईका बाग' का निर्माण इस राईका समाज के नाम पर तत्कालीन पड़िहार शासक सूरसिंह ने करवाया क्योंकि यहां राईका जाति का निवास स्थान था जिनके प्रमुख आसुराम पीशवाला राईका पड़िहार शासन में सूतरखाने के अधिकारी के रूप में कार्य करते थे।[1]

कालान्तर में पड़िहार शासको के मारवाड़ राठौड़ शासकों का अधिकार हो गया। राव चूडा को पड़िहारों ने मण्डोर दहेज में दे दिया। राठौड़ शासकों के शासन काल में भी इस समाज के लोग, सूतरसवार व हरकारे जैसे संदेशवाह, सैनिक, ठिकानेदार, पशुचरवाहा एवं विश्वस्त अंग रक्षक के रूप में कार्य किया। राव जोधा ने जोधपुर किले की स्थापना कर जोधपुर को मारवाड़ की राजधानी बनाया। जोधपुर किले की नींव की स्थापना के समय शीला ऊंट चरवाहें के बाड़े से लाकर लगवाई गई।[2] राव जोधा के कठिन समय में राईका समाज के लोग काम आए। कालान्तर में जसवंतसिंह प्रथम के समय अनेक राईकों ने उसके कठिन परिस्थितियों में सहायता की थी। यही कारण है कि जसवंतसिंह प्रथम ने कई राईकों को गांव पट्टे में दिए।[3]

कम संख्या	गांव	राईका गोत्र
1	करमसीसर	पीपावत
2	आसण्डा	सांगावत
3	ककराला जाजीवाल	पीपावत
4	भायला का बास सीवाणा	.....
5	उद्दीवास बैहलवा	.....

मारवाड़ के राठौड़ शासक मानसिंह के शासन काल में भी राईका जाति के लोगों का प्रशासन में विशेष योगदान था। जब जोधपुर पर मानसिंह का शासन था तब मारवाड़ के अनेक राईकें राठौड़ वंश से सम्बन्धित थे। विक्रम संवत् 1863–64 में जब जोधपुर किले को जयपुर–बीकानेर की संयुक्त सेना ने घेर लिया था।[4] जोधपुर किले में शासक के साथ उनके वफादारों में अनेक राईकें भी मौजूद थे। ये राईकें राजपरिवार के बहुत निकट थे। घेरे के समय सावंत राईका का पुत्र राईका उमों राईका आषाढ कृष्ण द्वादशी को फतेहपोल में लड़ते–लड़ते गोली लगने से घायल हो गया। इसी तरह राईका भगवान (राईका राहसींग का पुत्र) को हाथ पर गोली लगी। मानसिंह के शासन काल में घेरे के समय किले में उपस्थित राईकों के नाम है। हीन्दू राईका पुत्र बखता राईका, बखता राईका पुत्र हरनाथ राईका, भगवान राईका पुत्र राहासींग राईका, उमा राईका पुत्र परसाद राईका, हरचंद राईका पुत्र जैराम, चुतरों राईका पुत्र रतना राईका, गजो राईका पुत्र खेतसींग इत्यादि प्रमुख है।

इनके अलावा भी कुछ राईकें ओर भी थे। पुरकियों राईका जो सुजाण राईका का पुत्र था। धना राईका जो भागचंद राईका का पुत्र था।[5] गढ जोधपुर घेरे के समय इन राईकों ने अपनी वीरता एवं स्वामीभक्ति का परिचय दिया।

इसी तरह राईको महिपत मानसिंह का सेवक था। मानसिंह के शासन काल में उसे सिंध में नियुक्त किया गया था।[6] गढ जोधपुर घेरे के समय इन राईकों ने अपनी वीरता एवं स्वामी भक्ति का परिचय दिया। यही कारण है कि इनकी इसी स्वामी भक्ति से प्रसन्न होकर जोधपुर शासक मानसिंह ने इन वीर शाही राईकों को विभिन्न गांव के पट्टे जागीर में दिए। इनकी वीरता के सम्बंध में एक दोहा प्रचलित है–

''मुछ फरूके पवन सुं, पागां तिरछी पेहर।

राईकों महिपत मान रो, सिंध में दिना डेर।।''

मारवाड़ में राईका (रबारी) समाज राजपरिवार से निकट रूप से जुड़ा हुआ था। जिसके प्रमाण मारवाड़ के विभिन्न ठिकाने की बहियों में देखे जा सकते है। खेजड़ला ठिकाने में राईका उगरिया राज परिवार से विशेष रूप से जुड़ा हुआ था। ठिकाने के फतेहकंवर बाईसा के विवाह के समय राईका द्वारा बारात आने की सुचना देने पर नेग के रूप

में पगड़ी पहनाई गई।[7] जब रोहित ठिकाने के ठाकुर के यहां लड़के का जन्म हुआ और उसकी बधाई देने पर ठाकुर ने राइका को पाली से लायी गई कसुमल पाग बंधवाई।[8]

राईका जाति की संस्कृति :–

किसी भी समाज या जाति की संस्कृति का प्रतिक उसकी वेशभूषा होती है। मारवाड़ का यह रबारी समाज अपने विशिष्ट पहनावें के कारण मारवाड़ की संस्कृति का अभिन्न अंग बना हुआ है। मारवाड़ के राईकों का पहनावा क्षेत्रानुसार थोड़ा बहुत परिवर्तित हो सकता है। मारवाड़ के राईका पुरूषों और महिलाओं की वस्त्रों में अन्तर है। राईकाओं की वेशभूषा को दो मुख्य भागों में बांटा जा सकता है।

- महिलाओं की वेशभूषा
- पुरूषों की वेशभूषा

मारवाड़ म सभी जाति की वैशभूषा का तरीका समान था। मारवाड़ के रबारी (राईका) महिलाओं को 'राईकाणियां' कहा जाता है। मारवाड़ में रबारी (राईका) महिलाएं आमतौर पर कुरती, कांचली, घाघरा और ओढनी जैसे वस्त्र धारण करती है। इन वस्त्रों के विविध रंग होते है। जिनमें लाल, हरा, पीला,नीला आदि प्रमुख है।[9] मारवाड़ में राईका महिलाओं के वस्त्र जीवन की अवस्था के अनुसार कई भागों में बांटे गये है। जैसे कुंवारी राईका कन्या की वेशभूषा, विवाहित राईका स्त्री की वेशभूषा, वृद्ध राईका महिलाओं की वेशभूषा और विधवा राईका महिला की वेशभूषा इत्यादि। इनमें विधवा राईका महिला का पहनावा सबसे अलग ही होता है।

आटी मारवाड़ के मारू राईका स्त्रियों की विशेष पहचान का प्रतिक है जो इसे गोडवाड़ियों एवं अन्य जातिय समुदायों से अलग और विशेष बनाता है। साथ ही मारवाड़ में मारू राईका कन्याएं अपने विवाह के साथ ही सिर पर आटी भी धारण करती है अर्थात विवाहित महिलाएं ही धारण करती है। आटी राईका महिलाएं सिर में बालों के साथ गूंथती थी।[10] प्रारम्भ में आटी लकड़ी पर कपड़ो को गुंथकर तैयार की जाती थी किन्तु बाद चांदी की बनी आटो का उपयोग करने लगे। साथ ही आजकल इसका प्रयोग कम हो गया है। सीताराम लालस ने अपने शब्दकोश में आटी का उल्लेख आटी–डोरा के सन्दर्भ में किया है।

''कर में कांकणियां जसदा गल काठी
अद्भूद् मौरा पर लुड़तौड़ी आटी''[11]

इस दोहे के अनुसार हाथ में कांकणियां व गले में जसदा कंण्ठी अच्छी लगती है उसी प्रकार सिर पर झुकती आटी बहुत सुन्दर लगती है। मारवाड़ के ग्रामीण क्षेत्र की राईका ढाणियों में मैंने शोधयात्रा के दौरान कई महिलाओं को आटी पहने देखा।

मारवाड़ के राईका महिलाओ की विशेष पहचान का प्रतिक चूड़ा[12] है। यह प्रारम्भ में हाथी दांत से निर्मित होते थे। यह मुख्यतः उच्च जाति की महिलाएं ही पहनती थी जो मारवाड़ की राईका महिलाओं की उच्च स्थिति का द्योतक है। एक के ऊपर एक सभी बिल्लियों को रखा जाए तो यह एक गोलाकार गुम्बद या पिरामिड के समान दिखाई देता है। आजकल यह चूड़ा प्लास्टिक का बना आता है।[13] यह दोनों हाथों में कन्धे से कलाई तक पहना जाता है। इसमें बहुत सारी सफेद बिल्लियां होती है। इनकी संख्या अलग–अलग होती है। आमतौर पर 64 बिल्लियां पहनी जाती है। चुड़ा पहनने के आधार पर हाथ को दो भागों में विभाजित

नाथी देवी आटी पहने हुए व नीचे आटी का चित्र

किया जाता है। एक कलाई से ऊपर कोहनी तक तथा दुसरा कन्धे से कोहनी तक। दाएं हाथ में कन्धे के नीचे एवं कोहनी से ऊपर 25 तथा दुसरे हाथ में भी कन्धे के नीचे एवं कोहनी से ऊपर तक 25 सफेद बिल्लियां पहनी जाती है। अर्थात दोनों हाथों में कन्धे से कोहनी तक कुल 50 बिल्लियां पहनी जाती है। साथ ही दोनों हाथों की कलाईयो में 14 (7–7) बिल्लियां पहनी जाती है। यह चूड़ा विवाहित एवं सुहागन राईका स्त्रियां ही पहनती है।[14]

ओरणौ (ओढ़णी), मारवाड़ में स्त्रियों द्वारा ओढ़ा जाने वाला वस्त्र है।[15] मारवाड़ की रबारी (राईका) स्त्रियां अपने शरीर को पूर्णरूप से ढ़कने के लिए सिर पर ओरण ओढती है। मारवाड़ में ओरणा राईका महिला के लिए सम्मान का प्रतिक है।[16] ओरणा कुरती व कांचली को ढ़कता है। ओरणा लाल, गुलाबी, पीले जैसे विविध रंगों के होते थे। ये ओरणे सुती और माटे होते थे इनके किनारे पर नीले, स्वर्ण जैसा पिले व आसमानी रंगों का गोटा या फीत लगी होती थी। गोटे की चौड़ाई के आकार में समयानुसार परिवर्तित होता गया। ओरणा[17] सुती वस्त्र से बना गहरे रंग का होता था। ओरणे के बीच में गोटा पत्ती के फुल–पतियां बनी होती थी जिन्हें सम्भवतया हाथ से बनाया जाता था। विवाहित और विधवा राईका (रबारी) स्त्री के ओरणे में भी अन्तर था। मारवाड़ की विवाहित राईका (रबारी) महिलाएं विधवाओं के रंगों को छोड़कर विभिन्न रगों एवं फूल–पतियों से जड़े ओरणे ओढ़ती थी। किन्तु विधवा राईका (रबारी) महिलाएं विधवा ओढ़नी और दामणी जैसे ओरणे ओढ़ती थी।[18]

कुरती[19]–कांचली[20] भी मारवाड़ की राईका (रबारी) महिलाओं के परिधान का प्रमुख अंग रहा है। मारवाड़ में आज भी महिलाएं कुरती और कांचली पहनती है। महिलाओं द्वारा कुरती ओर कांचली दोनों शरीर के मध्य भाग (गले से नीचे का भाग और कमर के ऊपर के शरीर) पर पहना जाता है। कांचली विशेषतः महिलाओं के स्तन को ढ़कने के लिए पहनी जाती है।

घाघरा मारवाड़ की राईका महिलाओं द्वारा कमर से नीचे पहना जाने वाला एक वस्त्र है। पहले मारवाड़ की सभी राईका महिलाए टुकड़ी के घाघरे पहनती थी। यह मारवाड़ की राईका (रबारी) महिलाओं की पहचान का विशेष प्रतिक है। यह आधुनिक स्कर्ट के समान है। किन्तु मारवाड़ की राईका स्त्रियों के घाघरे कई प्रकार के होते है। जैसे 'छींट का घाघरा', 'टुकड़ी का घाघरा' इत्यादि प्रमुख है। ये घाघरे मोटे और सुती कपड़े बने होते के थे। मारवाड़ की कुंवारी राईका युवतियां एवं विवाहित महिलाएं दोनों ही छींट के घाघरे पहनती थी। जिसमें नीचे की ओर मगजी व गोटा दिया होता था। यह गोटा या मगजी मुख्यतः नीले व गुलाबी रंग की होती थी। विवाहित राईका महिला छींट के घाघरे को भी गोटा पती से जड़ कर पहनती थी। कालान्तर में समय के साथ कपड़े के रंगों की विविधता देखने को मिलती है।[21]

मारवाड़ के राईकों के पहनावें में पांच वस्तुएं प्रमुख है। सिर पर साफा/पोतिया, बदन पर अगरकी और चोला, कन्धे पर अंगौछा, कमर से नीचे सफेद धोती तथा पैरों में जूती (पगरकी) प्रमुख है।[22] जोधपुर से 40 कि.मी. बावड़ी गांव के राईकों की बासनी नामक ढ़ाणी से प्राप्त राईका जुंझारों के शिलालेखों में ऊंट सवार राईका के पहनावे को देखा जा सकता है।[23] मारवाड़ के मारू राईका एवं गोडवाड़ के रबारियों के पहनावे में भी अन्तर स्पष्ट दिखायी देता है। यह अन्तर इनके सिर से लेकर पांव तक के वस्त्रों को पहनने के तरीकों में देखा जा सकता है।[24]

जूतियां पैरों में पहनी जाने वाली वस्तु है। मारवाड़ में पुरूषों की तरह महिलाऐं भी

जूतियां पहनती थी और आज भी पहनती है। जूतियों को पगरकी, मोजड़ी, तथा खालड़ा रा लिक्तर (खाल अर्थात चमड़े से बने होने के कारण) भी कहा जाता है। मारवाड़ में राईका जाति के पुरूष व महिलाओं दोनों की जूतियों में अन्तर है। साथ ही राईका महिलाओं की जूतियां भी अवस्था के अनुसार भी अलग अलग होती है। बुजुर्ग राईका स्त्री–पुरूष दोनों की पगरकियां साधारण और चमड़े की बनी होती है। दूसरी ओर राईका युवा एवं युवतियां विभिन्न रंगों की कसीदायुक्त पगरकियां धारण करते थे। ये पगरकियां बहुत मजबूत होती थी जो मारवाड़ जैसे मरूस्थलीय क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होती है। इनका निर्माण चमार जाति के लोग करते थे जो चमड़े को हाथों से सिलकर जूतियां तैयार करते थे।[25] मारवाड़ के ग्रामीण क्षेत्र में गाए जाने वाले स्थानीय गीतों में भी महिलाओं द्वारा जूतियां पहनने का उल्लेख मिलता है। क्षेत्रीय सर्वेक्षण के दौरान किए गए साक्षात्कार में नाड़सर गांव की एक महिला द्वारा गाए गए गीत के बोल–

''थे यो पाल राजा बिराजों मोची जी रे हाट

बन्दोला (जूतियां) मोलावों सोढी राणी रे कारणें''[26]

इस प्रकार निष्कर्षतः मारवाड़ के राईका समाज का इतिहास व संस्कृति बहुत ही प्राचीन और विशेष है। मारवाड़ के राईका–राईकाणी को उसकी वेशभूषा से पहचाना जाता है। इस शोधपत्र के द्वारा इस जातीय समाज के दबे इतिहास व अप्रकाशित संस्कृति को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है। इस समाज के इतिहास व संस्कृति पर पूर्व में बहुत कम शोध हुआ है। कुछेक शोध किए गए किन्तु उनमें भी धार्मिक जीवन को दिखाया गया है। साथ ही वे शोध अंग्रेजी व फ्रेंच जैसी विदेशी भाषाओं में है जिसे आम भारतीय नहीं पढ़ सकता। इस शोधपत्र में इस समाज की पहचान इसके पहनावे का वर्णन किया गया है। जिसमे इनके महिलाओं के ओढनी, कुरती कांचली, घाघरा, आटी व चूड़े का विशेष रूप से वर्णन किया गया है।

REFERENCES

1. उज्जवल, मांगीलाल : राव बही लाम्बियां, पाली
2. रेउ, विश्वेश्वर नाथ : मारवाड़ का इतिहास, भाग– 2, पृ. सं. 61, 93,
3. चन्द्र, प्रो. सतीश, रघुवीरसिंह व घनश्यामदत शर्मा : जोधपुर हुकुमत री बही, पृ. सं. 233,
4. रेउ, विश्वेश्वर नाथ : मारवाड़ का इतिहास, भाग– 2, पृ. सं. 409–416,
5. भाटी, डॉ. हुकुमसिंह : गढ जोधपुर घेरे की बही, पृ. सं. 11, 16, 35, 47, 59 विक्रम संवत् 1863–64,
6. उज्जवल, दिलीप राव : राव बही, लाम्बियां गांव, जैतारण, पाली
7. कपड़ा वगैरे री जमा खरच री बही : खेजड़ला ठिकाना, सं. सं. 164, वि. सं.1918–24,
8. रोहिट री कचेड़ी रो रोजनामों : रोहिट ठिकाना, सं. सं. 1107, विक्रम संवत् 1911,
9. (1) प्रबल, सेण्डराईन : आज के खानाबदोश, पृ. सं.59

(2) हकीकत बही, वि. स. 1820–1840

(3) ब्याह बही नं. एफ–एफ 127, 129, 133

10. हरदयाल, रायबहादुर मुंशी : रिपोर्ट मरदुमशुमारी राज मारवाड़ 1891, पृ. सं. 571
11. लालस, सीताराम : राजस्थानी सबदकोस, भाग–1, पृ. सं. 191
12. (1) गहलोत, सुखवीरसिंह : राजस्थान के रीतिरिवाज, पृ. सृ. 187

(2) नगर, महेन्द्रसिंह : मारवाड़ के राजवंश की सांस्कृतिक परम्परा, भाग–2, पृ. सं. 332

13. प्रबल, सेण्डराईन : आज के खानाबदोश, पृ. सं. 58
14. व्यक्तिगत साक्षात्कार : इन्द्रा देवी पत्नि स्व. भीकाराम गागल राईका, उम्र–65 वर्ष, गांव मलार, जोधपुर
15. लालस, सीताराम : राजस्थानी सबदकोस भाग–1, पृ. सं. 368
16. श्रीवास्तव, विनय कुमार : रिलिजियस रेन्युनसिएशन ऑफ पेस्टोरल पीपल, पृ. सं. 49
17. गहलोत, सुखसिंह (सम्पादक) : नवा कपड़ा रा कोठार री बही– विजयसिंह 1849
18. व्यक्तिगत साक्षात्कार : पप्पू देवी पत्नि स्व. मोडाराम आल राईका, उम्र–65 वर्ष, कास्टी गांव, जोधपुर
19. लालस, सीताराम : राजस्थानी सबदकोस, भाग–1, पृ. सं. 523
20. नगर, महेन्द्रसिंह : मारवाड़ के राजवंश की सांस्कृतिक परम्परा, भाग–2, पृ. सं. 318
21. व्यक्तिगत साक्षात्कार : हंसा देवी पत्नी खींयाराम राईका, उम्र–70 वर्ष, गांव रास, जिला पाली
22. राठी, डॉ. दिनेश : अठारवीं सदी के प्रारम्भ में मारवाड़, पृ. सं. 202
23. राईकों की बासनी के जुंझारजी का शिलालेख, वि. स. 1735
24. प्रबल, सेण्डराईन : आज के खानाबदोश, पृ. सं. 62–63
25. व्यक्तिगत साक्षात्कार : पप्पू देवी पत्नि स्व. मोडाराम आल राईका, उम्र–65 वर्ष, कास्टी गांव, जिला, जोधपुर
26. व्यक्तिगत साक्षात्कार : नाथीदेवी पत्नि भंवरलाल आल राईका, उम्र–65 वर्ष, नाड़सर गांव, जिला जोधपुर